Name of Paper : HINDUSTAN
Published at : NEW DELHI
Dated : 27 JUN 2007

कॉल सेंटरों में युवाओं पर सिंथेटिक ड्रग्स का खुमार

संदीप ठाकुर

अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स उपयोग व अवैध व्यापार निरोधक दिवस

नई दिल्ली। राजधानी में नाइट लाइफ के शौकीन युवक-युवतियों के साथ ही कॉल सेंटरों में काम करने वालों के बीच सिंथेटिक ड्रग्स के तेजी से बढ़ते क्रेज ने इसकी मांग कई गुना बढ़ा दी है। मांग बढ़ने के साथ ही तस्करी भी बढ़ रही है। तस्करी में होने वाले मुनाफे का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि नीदरलैंड में महज 5 सेंट (पैसे) में बिकने वाली "एक्टसी" व "युरास" की एक गोली अमेरिका में 50 डालर की हो जाती है। जबकि भारत में क्लबों,पबों व डिस्केथिक तक पहुंचते पहुंचते यही एक गोली 700 से हजार रुपए के बीच बिकती है।

बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि सिंथेटिक ड्रग्स में "युरास" व "एक्टसी" नामक दो नशीली गोलियों की मांग सबसे अधिक है। दोनों का नशा अलग-अलग तरह का है। मादक पदार्थ की तस्करी की रोकथाम में लगी विभिन्न सरकारी एजेसिंयों के सूत्रों का कहना है कि हेरोइन,कोकीन आदि को पहचानना और पकड़ना आसान है लेकिन बिना गंध-सुगंध के सिंथेटिक ड्रग्स की पहचान निहायत ही मुश्किल है। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के एक अधिकारी ने कहा कि कल्पना से परे होने वाले मुनाफे और माल इधर से उधर करने में अपेक्षाकृत में मिला आसपास के लोगों को बगैर कोई अहसास कराए लिए जाने की सुविधा के चलते पार्टी एनिमल कहलाने में फर्क महसूस करने वाले युवाओं के बीच इसकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ती जा रही है।

नशाले पदार्थ पर संयुक्त राष्ट्र की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक सिंथेटिक ड्रग्स 21वीं शताब्दी में विश्व के लिए एक नाइटमेयर बनेगा और भारत के लिए बड़े खतरों में से एक बन कर उबरेगा। रिपोर्ट में किया गया खुलासा चौंकाने वाला है। दुनिया भर में 22 करोड़ 60 लाख लोग अवैध नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। सर्वाधिक 16 करोड़ 20 लाख नशेड़ी भांग-हशीश से निर्मित नशे का सेवन करते हैं। 3 करोड़ 5 लाख लोग एटीएस (स्टिमुलैंट्स) श्रेणी में ने वाले ड्रग्स और 1 करोड़ 60 लाख लोग अफीम,हेरोइन आदि का सेवन करते हैं। जबकि 1 करोड़ 30 लाख लोग कोकीन का नशा करते हैं। एनसीबी के आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण भारत और खास तौर से दिल्ली सिंथेटिक ड्रग्स सिंडिकेट चलाने वालों का मुख्य बिंदु बन रहा है। गोल्डन ट्रैंगल और